शुद्धचित्त होकर मनुष्य ब्रह्मलोकको जाता है॥ १२७॥

ऋषीणां यत्र सत्राणि समाप्तानि नराधिप।
तत्रावसानमासाद्य गोसहस्रफलं लभेत्॥ १२८॥

नरेश्वर! जहाँ ऋषियोंके सत्र समाप्त हुए हैं, वहाँ अवसानतीर्थमें जाकर मनुष्य सहस्र गोदानका फल पाता है॥ १२८॥

इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि तीर्थयात्रापर्वणि पुलस्त्यतीर्थयात्रायां द्व्यशीतितमोऽध्यायः॥ ८२॥

इस प्रकार श्रीमहाभारत वनपर्वके अन्तर्गत तीर्थयात्रापर्वमें पुलस्त्यकथिततीर्थयात्राविषयक बयासीवाँ अध्याय पूरा हुआ॥ ८२॥

~~०~~

त्र्यशीतितमोऽध्यायः

कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित अनेक तीर्थोंकी महत्ताका वर्णन

पुलस्त्य उवाच

ततो गच्छेत राजेन्द्र कुरुक्षेत्रमभिष्टुतम्।
पापेभ्यो यत्र मुच्यन्ते दर्शनात् सर्वजन्तवः॥ १॥

पुलस्त्यजी कहते हैं—राजेन्द्र! तदनन्तर ऋषियोंद्वारा प्रशंसित कुरुक्षेत्रकी यात्रा करे, जिसके दर्शनमात्रसे सब जीव पापोंसे मुक्त हो जाते हैं॥ १॥

कुरुक्षेत्रं गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम्।
य एवं सततं ब्रूयात् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ २॥

'मैं कुरुक्षेत्रमें जाऊँगा, कुरुक्षेत्रमें निवास करूँगा।' इस प्रकार जो सदा कहा करता है, वह सब पापोंसे मुक्त हो जाता है॥ २॥

पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुदीरिताः।
अपि दुष्कृतकर्माणं नयन्ति परमां गतिम्॥ ३॥

वायुद्वारा उड़ाकर लायी हुई कुरुक्षेत्रकी धूल भी शरीरपर पड़ जाय, तो वह पापी मनुष्यको भी परमगतिकी प्राप्ति करा देती है॥ ३॥

दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे॥ ४॥

जो सरस्वतीके दक्षिण और दृषद्वतीके उत्तर कुरुक्षेत्रमें वास करते हैं, वे मानो स्वर्गलोकमें ही रहते हैं॥ ४॥

तत्र मासं वसेद् धीरः सरस्वत्यां युधिष्ठिर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयः सिद्धचारणाः॥ ५॥
गन्धर्वाप्सरसो यक्षाः पन्नगाश्च महीपते।
ब्रह्मक्षेत्रं महापुण्यमभिगच्छन्ति भारत॥ ६॥

(नारदजी कहते हैं—) युधिष्ठिर! वहाँ सरस्वतीके तटपर धीर पुरुष एक मासतक निवास करे; क्योंकि महाराज! ब्रह्मा आदि देवता, ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष और नाग भी उस परम पुण्यमय ब्रह्मक्षेत्रको जाते हैं॥ ५-६॥

मनसाप्यभिकामस्य कुरुक्षेत्रं युधिष्ठिर।
पापानि विप्रणश्यन्ति ब्रह्मलोकं च गच्छति॥ ७॥

युधिष्ठिर! जो मनसे भी कुरुक्षेत्रमें जानेकी इच्छा करता है, उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं और वह ब्रह्मलोकको जाता है॥ ७॥

गत्वा हि श्रद्धया युक्तः कुरुक्षेत्रं कुरूद्वह।
फलं प्राप्नोति च तदा राजसूयाश्वमेधयोः॥ ८॥

कुरुश्रेष्ठ! श्रद्धासे युक्त होकर कुरुक्षेत्रकी यात्रा करनेपर मनुष्य राजसूय और अश्वमेधयज्ञोंका फल पाता है॥ ८॥

ततो मचक्रुकं नाम द्वारपालं महाबलम्।
यक्षं समभिवाद्यैव गोसहस्रफलं लभेत्॥ ९॥

तदनन्तर, वहाँ मचक्रुक नामवाले द्वारपाल महाबली यक्षको नमस्कार करनेमात्रसे सहस्र गोदानका फल मिल जाता है॥ ९॥

ततो गच्छेत धर्मज्ञ विष्णोः स्थानमनुत्तमम्।
सततं नाम राजेन्द्र यत्र संनिहितो हरिः॥ १०॥

धर्मज्ञ राजेन्द्र! तत्पश्चात् भगवान् विष्णुके परम उत्तम सतत नामक तीर्थस्थानमें जाय, जहाँ श्रीहरि सदा निवास करते हैं॥ १०॥

तत्र स्नात्वा च नत्वा च त्रिलोकप्रभवं हरिम्।
अश्वमेधमवाप्नोति विष्णुलोकं च गच्छति॥ ११॥
ततः पारिप्लवं गच्छेत् तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
अग्निष्टोमातिरात्राभ्यां फलं प्राप्नोति भारत॥ १२॥

वहाँ स्नान और त्रिलोकभावन भगवान् श्रीहरिको नमस्कार करनेसे मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल पाता और भगवान् विष्णुके लोकमें जाता है। इसके बाद त्रिभुवनविख्यात पारिप्लव नामक तीर्थमें जाय। भारत! वहाँ स्नान करनेसे अग्निष्टोम और अतिरात्रयज्ञोंका फल

Scanned with CamScanner

करता है॥ ४४-४५॥

श्रीतीर्थं च समासाद्य स्नात्वा नियतमानसः।
अर्चयित्वा पितॄन् देवान् विन्दते श्रियमुत्तमाम्॥ ४६॥

मनको वशमें करके श्रीतीर्थमें जाकर स्नान करके देवताओं और पितरोंकी पूजा करनेसे मनुष्य उत्तम सम्पत्ति प्राप्त करता है॥ ४६॥

कपिलातीर्थमासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
तत्र स्नात्वार्चयित्वा च पितॄन् स्वान् दैवतान्यपि॥ ४७॥
कपिलानां सहस्रस्य फलं विन्दति मानवः।

कपिला-तीर्थमें जाकर ब्रह्मचर्यके पालनपूर्वक एकाग्रचित्त हो वहाँ स्नान और देवता-पितरोंका पूजन करके मानव सहस्र कपिला गौओंके दानका फल प्राप्त करता है॥ ४७½॥

सूर्यतीर्थं समासाद्य स्नात्वा नियतमानसः॥ ४८॥
अर्चयित्वा पितॄन् देवानुपवासपरायणः।
अग्निष्टोममवाप्नोति सूर्यलोकं च गच्छति॥ ४९॥

मनको वशमें करके सूर्यतीर्थमें जाकर स्नान और देवता-पितरोंका अर्चन करके उपवास करनेवाला मनुष्य अग्निष्टोमयज्ञका फल पाता और सूर्यलोकमें जाता है॥ ४८-४९॥

गवां भवनमासाद्य तीर्थसेवी यथाक्रमम्।
तत्राभिषेकं कुर्वाणो गोसहस्रफलं लभेत्॥ ५०॥

तदनन्तर तीर्थसेवी क्रमशः गोभवनतीर्थमें जाकर वहाँ स्नान करे। इससे उसको सहस्र गोदानका फल मिलता है॥ ५०॥

शङ्खिनीतीर्थमासाद्य तीर्थसेवी कुरूद्वह।
देव्यास्तीर्थे नरः स्नात्वा लभते रूपमुत्तमम्॥ ५१॥

कुरुश्रेष्ठ! तीर्थयात्री पुरुष शंखिनीतीर्थमें जाकर वहाँ देवीतीर्थमें स्नान करनेसे उत्तम रूप प्राप्त करता है॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र द्वारपालमरन्तुकम्।
तच्च तीर्थं सरस्वत्यां यक्षेन्द्रस्य महात्मनः॥ ५२॥
तत्र स्नात्वा नरो राजन्नग्निष्टोमफलं लभेत्।

राजेन्द्र! तदनन्तर अरन्तुक नामक द्वारपालके पास जाय। महात्मा यक्षराज कुबेरका वह तीर्थ सरस्वती नदीमें है। राजन्! वहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको अग्निष्टोमयज्ञका फल प्राप्त होता है॥ ५२½॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र ब्रह्मावर्तं नरोत्तमः॥ ५३॥
ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्।

राजेन्द्र! तदनन्तर श्रेष्ठ मानव ब्रह्मावर्ततीर्थको जाय। ब्रह्मावर्तमें स्नान करके मनुष्य ब्रह्मलोकको प्राप्त कर लेता है॥ ५३½॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र सुतीर्थकमनुत्तमम्॥ ५४॥
तत्र संनिहिता नित्यं पितरो दैवतैः सह।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः॥ ५५॥
अश्वमेधमवाप्नोति पितृलोकं च गच्छति।

राजेन्द्र! वहाँसे परम उत्तम सुतीर्थमें जाय। वहाँ देवतालोग पितरोंके साथ सदा विद्यमान रहते हैं। वहाँ पितरों और देवताओंके पूजनमें तत्पर हो स्नान करे। इससे तीर्थयात्री अश्वमेधयज्ञका फल पाता और पितृलोकमें जाता है॥ ५४-५५½॥

ततोऽम्बुमत्यां धर्मज्ञ सुतीर्थकमनुत्तमम्॥ ५६॥

धर्मज्ञ! वहाँसे अम्बुमतीमें, जो परम उत्तम तीर्थ है, जाय॥ ५६॥

काशीश्वरस्य तीर्थेषु स्नात्वा भरतसत्तम।
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो ब्रह्मलोके महीयते॥ ५७॥

भरतश्रेष्ठ! काशीश्वरके तीर्थोंमें स्नान करके मनुष्य सब रोगोंसे मुक्त हो जाता और ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठित होता है॥ ५७॥

मातृतीर्थं च तत्रैव यत्र स्नातस्य भारत।
प्रजा विवर्धते राजन्नतन्वीं श्रियमश्नुते॥ ५८॥

भरतवंशी महाराज! वहीं मातृतीर्थ है, जिसमें स्नान करनेवाले पुरुषकी संतति बढती है और वह कभी क्षीण न होनेवाली सम्पत्तिका उपभोग करता है॥

ततः सीतवनं गच्छेन्नियतो नियताशनः।
तीर्थं तत्र महाराज महदन्यत्र दुर्लभम्॥ ५९॥

तदनन्तर नियमसे रहकर नियमित भोजन करते हुए सीतवनमें जाय। महाराज! वहाँ महान् तीर्थ है, जो अन्यत्र दुर्लभ है॥ ५९॥

पुनाति गमनादेव दृष्टमेकं नराधिप।
केशानभ्युक्ष्य वै तस्मिन् पूतो भवति भारत॥ ६०॥

नरेश्वर! वह तीर्थ एक बार जाने या दर्शन करनेसे ही पवित्र कर देता है। भारत! उसमें केशोंको धो लेने मात्रसे ही मनुष्य पवित्र हो जाता है॥ ६०॥

तीर्थं तत्र महाराज श्वाविल्लोमापहं स्मृतम्।
यत्र विप्रा नरव्याघ्र विद्वांसस्तीर्थतत्पराः॥ ६१॥
प्रीतिं गच्छन्ति परमां स्नात्वा भरतसत्तम।
श्वाविल्लोमापनयने तीर्थे भरतसत्तम॥ ६२॥
प्राणायामैर्निर्हरन्ति स्वलोमानि द्विजोत्तमाः।
पूतात्मानश्च राजेन्द्र प्रयान्ति परमां गतिम्॥ ६३॥

महाराज! वहाँ श्वाविल्लोमापह नामक तीर्थ

Scanned with CamScanner

'अनघ! ब्रह्मा आदि सब देवता आपहीमें दिखायी देते हैं। इस जगत्के करने और करानेवाले सब कुछ आप ही हैं॥ १२९॥

त्वत्प्रसादात् सुराः सर्वे मोदन्तीहाकुतोभयाः।
एवं स्तुत्वा महादेवमृषिर्वचनमब्रवीत्॥ १३०॥

'आपके प्रसादसे सब देवता यहाँ निर्भय और प्रसन्न रहते हैं।' इस प्रकार स्तुति करके ऋषिने फिर महादेवजीसे कहा—॥ १३०॥

त्वत्प्रसादान्महादेव तपो मे न क्षरेत वै।
ततो देवः प्रहृष्टात्मा ब्रह्मर्षिमिदमब्रवीत्॥ १३१॥

'महादेव! आपकी कृपासे मेरी तपस्या नष्ट न हो।' तब महादेवजीने प्रसन्नचित्त हो महर्षिसे कहा—॥ १३१॥

तपस्ते वर्धतां विप्र मत्प्रसादात् सहस्रधा।
आश्रमे चेह वत्स्यामि त्वया सह महामुने॥ १३२॥

'ब्रह्मन्! मेरे प्रसादसे आपकी तपस्या हजार-गुनी बढ़े। महामुने! मैं तुम्हारे साथ इस आश्रममें रहूँगा॥ १३२॥

सप्तसारस्वते स्नात्वा अर्चयिष्यन्ति ये तु माम्।
न तेषां दुर्लभं किंचिदिहलोके परत्र च॥ १३३॥

'जो सप्तसारस्वततीर्थमें स्नान करके मेरी पूजा करेंगे, उनके लिये इहलोक और परलोकमें कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होगी॥ १३३॥

सारस्वतं च ते लोकं गमिष्यन्ति न संशयः।
एवमुक्त्वा महादेवस्तत्रैवान्तरधीयत॥ १३४॥

'इतना ही नहीं, वे सरस्वतीके लोकमें जायँगे, इसमें संशय नहीं है।' ऐसा कहकर महादेवजी वहीं अन्तर्धान हो गये॥ १३४॥

ततस्त्वौशनसं गच्छेत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयश्च तपोधनाः॥ १३५॥

तदनन्तर तीनों लोकोंमें विख्यात औशनसतीर्थकी यात्रा करे, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता तथा तपस्वी ऋषि रहते हैं॥ १३५॥

कार्तिकेयश्च भगवांस्त्रिसंध्यं किल भारत।
सांनिध्यमकरोन्नित्यं भार्गवप्रियकाम्यया॥ १३६॥

भारत! शुक्राचार्यजीका प्रिय करनेके लिये भगवान् कार्तिकेय भी वहाँ सदा तीनों संध्याओंके समय उपस्थित रहते हैं॥ १३६॥

कपालमोचनं तीर्थं सर्वपापप्रमोचनम्।
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ १३७॥

कपालमोचनतीर्थ सब पापोंसे छुड़ानेवाला है! नरश्रेष्ठ! वहाँ स्नान करके मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है॥ १३७॥

अग्नितीर्थं ततो गच्छेत् तत्र स्नात्वा नरर्षभ।
अग्निलोकमवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्॥ १३८॥

नरश्रेष्ठ! वहाँसे अग्नितीर्थको जाय। उसमें स्नान करनेसे मनुष्य अग्निलोकमें जाता और अपने कुलका उद्धार कर देता है॥ १३८॥

विश्वामित्रस्य तत्रैव तीर्थं भरतसत्तम।
तत्र स्नात्वा नरश्रेष्ठ ब्राह्मण्यमधिगच्छति॥ १३९॥

भरतसत्तम! वहीं विश्वामित्रतीर्थ है। नरश्रेष्ठ! वहाँ स्नान करनेसे ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति होती है॥ १३९॥

ब्रह्मयोनिं समासाद्य शुचिः प्रयतमानसः।
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र ब्रह्मलोकं प्रपद्यते॥ १४०॥
पुनात्यासप्तमं चैव कुलं नास्त्यत्र संशयः।

नरश्रेष्ठ! ब्रह्मयोनितीर्थमें जाकर पवित्र एवं जितात्मा पुरुष वहाँ स्नान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त कर लेता है। साथ ही अपने कुलकी सात पीढ़ियोंतकको पवित्र कर देता है, इसमें संशय नहीं है॥ १४०½॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्॥ १४१॥
पृथूदकमिति ख्यातं कार्तिकेयस्य वै नृप।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः॥ १४२॥

राजेन्द्र! तदनन्तर कार्तिकेयके त्रिभुवनविख्यात पृथूदकतीर्थकी यात्रा करे और वहाँ स्नान करके देवताओं तथा पितरोंकी पूजामें संलग्न रहे॥ १४१-१४२॥

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि स्त्रिया वा पुरुषेण वा।
यत् किंचिदशुभं कर्म कृतं मानुषबुद्धिना॥ १४३॥
तत् सर्वं नश्यते तत्र स्नातमात्रस्य भारत।
अश्वमेधफलं चास्य स्वर्गलोकं च गच्छति॥ १४४॥

भारत! स्त्री हो या पुरुष, उसने मानव-बुद्धिसे अनजानमें या जान-बूझकर जो कुछ भी पापकर्म किया है, वह सब पृथूदकतीर्थमें स्नान करनेमात्रसे नष्ट हो जाता है और तीर्थसेवी पुरुषको अश्वमेधयज्ञके फल एवं स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है॥ १४३-१४४॥

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात् सरस्वती।
सरस्वत्याश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम्॥ १४५॥

कुरुक्षेत्रतीर्थको सबसे पवित्र कहते हैं, कुरुक्षेत्रसे भी पवित्र है सरस्वती नदी, सरस्वतीसे भी पवित्र हैं उसके तीर्थ और उन तीर्थोंसे भी पवित्र हैं पृथूदक॥ १४५॥

Scanned with CamScanner

चतुरशीतितमोऽध्यायः

नाना प्रकारके तीर्थोंकी महिमा

पुलस्त्य उवाच

ततो गच्छेन्महाराज धर्मतीर्थमनुत्तमम्।
यत्र धर्मो महाभागस्तप्तवानुत्तमं तपः॥ १॥

पुलस्त्यजी कहते हैं—महाराज! तदनन्तर परम उत्तम धर्मतीर्थकी यात्रा करे, जहाँ महाभाग धर्मने उत्तम तपस्या की थी॥ १॥

तेन तीर्थं कृतं पुण्यं स्वेन नाम्ना च विश्रुतम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन् धर्मशीलः समाहितः॥ २॥
आसप्तमं कुलं चैव पुनीते नात्र संशयः।

राजन्! उन्होंने ही अपने नामसे विख्यात पुण्य तीर्थकी स्थापना की है। वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य धर्मशील एवं एकाग्रचित्त होता है और अपने कुलकी सातवीं पीढ़ीतकके लोगोंको पवित्र कर देता है; इसमें संशय नहीं है॥ २½॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र ज्ञानपावनमुत्तमम्॥ ३॥
अग्निष्टोममवाप्नोति मुनिलोकं च गच्छति।

राजेन्द्र! तदनन्तर उत्तम ज्ञानपावन तीर्थमें जाय। वहाँ जानेसे मनुष्य अग्निष्टोमयज्ञका फल पाता और मुनिलोकमें जाता है॥ ३½॥

सौगन्धिकवनं राजंस्ततो गच्छेत मानवः॥ ४॥

राजन्! तत्पश्चात् मानव सौगन्धिक वनमें जाय॥ ४॥

तत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयश्च तपोधनाः।
सिद्धचारणगन्धर्वाः किंनराश्च महोरगाः॥ ५॥

वहाँ ब्रह्मा आदि देवता, तपोधन ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, किन्नर और बड़े-बड़े नाग निवास करते हैं॥

तद् वनं प्रविशन्नेव सर्वपापैः प्रमुच्यते।
ततश्चापि सरिच्छ्रेष्ठा नदीनामुत्तमा नदी॥ ६॥
प्लक्षाद्देवी स्रुता राजन् महापुण्या सरस्वती।
तत्राभिषेकं कुर्वीत वल्मीकान्निःसृते जले॥ ७॥

उस वनमें प्रवेश करते ही मानव सब पापोंसे मुक्त हो जाता है। उससे आगे सरिताओंमें श्रेष्ठ और नदियोंमें उत्तम नदी परम पुण्यमयी सरस्वतीदेवीका उद्गम स्थान है, जहाँ वे प्लक्ष (पकड़ी) नामक वृक्षकी जड़से टपक रही हैं। राजन्! वहाँ बाँबीसे निकले हुए जलमें स्नान करना चाहिये॥ ६-७॥

अर्चयित्वा पितॄन् देवानश्वमेधफलं लभेत्।
ईशानाध्युषितं नाम तत्र तीर्थं सुदुर्लभम्॥ ८॥

वहाँ देवताओं तथा पितरोंकी पूजा करनेसे मनुष्यको अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है। वहीं ईशानाध्युषित नामक परम दुर्लभ तीर्थ है॥ ८॥

षट्सु शम्यानिपातेषु वल्मीकादिति निश्चयः।
कपिलानां सहस्रं च वाजिमेधं च विन्दति॥ ९॥
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र दृष्टमेतत् पुरातनैः।

जहाँ बाँबीका जल है, वहाँसे इसकी दूरी छः शम्यानिपात* है। यह निश्चित माप बताया गया है। नरश्रेष्ठ! उस तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्यको सहस्र कपिलादान और अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है; इसे प्राचीन ऋषियोंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है॥ ९½॥

सुगन्धां शतकुम्भां च पञ्चयज्ञां च भारत॥ १०॥
अभिगम्य नरश्रेष्ठ स्वर्गलोके महीयते।

भारत! पुरुषरत्न! सुगन्धा, शतकुम्भा तथा पंचयज्ञा तीर्थमें जाकर मानव स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है॥ १०½॥

त्रिशूलखातं तत्रैव तीर्थमासाद्य भारत॥ ११॥
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः।
गाणपत्यं च लभते देहं त्यक्त्वा न संशयः॥ १२॥

भरतकुलतिलक! वहीं त्रिशूलखात नामक तीर्थ है; वहाँ जाकर स्नान करे और देवताओं तथा पितरोंकी पूजामें लग जाय। ऐसा करनेवाला मनुष्य देहत्यागके अनन्तर गणपति-पद प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं है॥ ११-१२॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र देव्याः स्थानं सुदुर्लभम्।
शाकम्भरीति विख्याता त्रिषु लोकेषु विश्रुता॥ १३॥

राजेन्द्र! वहाँसे परमदुर्लभ देवीस्थानकी यात्रा करे, वह देवी तीनों लोकोंमें शाकम्भरीके नामसे विख्यात है॥ १३॥

दिव्यं वर्षसहस्रं हि शाकेन किल सुव्रता।
आहारं सा कृतवती मासि मासि नराधिप॥ १४॥
ऋषयोऽभ्यागतास्तत्र देव्या भक्त्या तपोधनाः।
आतिथ्यं च कृतं तेषां शाकेन किल भारत॥ १५॥

---

* शम्याका अर्थ है डंडा। कोई बलवान् पुरुष डंडेको खूब जोर लगाकर फेंके तो वह जहाँ गिरे, उतनी दूरके स्थानको एक शम्यानिपात कहते हैं। ऐसे ही छः शम्यानिपातकी दूरी समझ लेनी चाहिये।

Scanned with CamScanner

तीर्थमें जाय। वहाँ रातभर उपवास करनेसे उसे सहस्र गोदानका फल मिलता है॥ ३१॥

नागराजस्य राजेन्द्र कपिलस्य महात्मनः।
तीर्थं कुरुवरश्रेष्ठ सर्वलोकेषु विश्रुतम्॥ ३२॥

राजेन्द्र! कुरुश्रेष्ठ! वहीं नागराज महात्मा कपिलका तीर्थ है, जो सम्पूर्ण लोकोंमें विख्यात है॥ ३२॥

तत्राभिषेकं कुर्वीत नागतीर्थे नराधिप।
कपिलानां सहस्रस्य फलं विन्दति मानवः॥ ३३॥

महाराज! वहाँ नागतीर्थमें स्नान करना चाहिये। इससे मनुष्यको सहस्र कपिलादानका फल प्राप्त होता है॥ ३३॥

ततो ललितकं गच्छेच्छान्तनोस्तीर्थमुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन् न दुर्गतिमवाप्नुयात्॥ ३४॥

तत्पश्चात् शान्तनुके उत्तम तीर्थ ललितकमें जाय। राजन्! वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता॥ ३४॥

गङ्गायमुनयोर्मध्ये स्नाति यः संगमे नरः।
दशाश्वमेधानाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्॥ ३५॥

जो मनुष्य गंगा-यमुनाके बीच संगम (प्रयाग)-में स्नान करता है, उसे दस अश्वमेधयज्ञोंका फल मिलता है और वह अपने कुलका उद्धार कर देता है॥ ३५॥

ततो गच्छेत राजेन्द्र सुगन्धां लोकविश्रुताम्।
सर्वपापविशुद्धात्मा ब्रह्मलोके महीयते॥ ३६॥

राजेन्द्र! तदनन्तर लोकविख्यात सुगन्धातीर्थकी यात्रा करे। इससे सब पापोंसे विशुद्धचित्त हुआ मानव ब्रह्मलोकमें पूजित होता है॥ ३६॥

रुद्रावर्तं ततो गच्छेत् तीर्थसेवी नराधिप।
तत्र स्नात्वा नरो राजन् स्वर्गलोकं च गच्छति॥ ३७॥

नरेश्वर! तदनन्तर तीर्थसेवी पुरुष रुद्रावर्ततीर्थमें जाय। राजन्! वहाँ स्नान करके मनुष्य स्वर्गलोकमें जाता है॥ ३७॥

गङ्गायाश्च नरश्रेष्ठ सरस्वत्याश्च संगमे।
स्नात्वाश्वमेधं प्राप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥ ३८॥

नरश्रेष्ठ! गंगा और सरस्वतीके संगममें स्नान करनेसे मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल पाता और स्वर्गलोकमें जाता है॥ ३८॥

भद्रकर्णेश्वरं गत्वा देवमर्च्य यथाविधि।
न दुर्गतिमवाप्नोति नाकपृष्ठे च पूज्यते॥ ३९॥

भगवान् भद्रकर्णेश्वरके समीप जाकर विधिपूर्वक उनकी पूजा करनेवाला पुरुष कभी दुर्गतिमें नहीं पड़ता और स्वर्गलोकमें पूजित होता है॥ ३९॥

ततः कुब्जाम्रकं गच्छेत् तीर्थसेवी नराधिप।
गोसहस्रमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥ ४०॥

नरेन्द्र! तत्पश्चात् तीर्थसेवी मानव कुब्जाम्रक-तीर्थमें जाय। वहाँ उसे सहस्र गोदानका फल मिलता है और अन्तमें वह स्वर्गलोकको जाता है॥ ४०॥

अरुन्धतीवटं गच्छेत् तीर्थसेवी नराधिप।
सामुद्रकमुपस्पृश्य ब्रह्मचारी समाहितः॥ ४१॥
अश्वमेधमवाप्नोति त्रिरात्रोपोषितो नरः।
गोसहस्रफलं विद्यात् कुलं चैव समुद्धरेत्॥ ४२॥

नरपते! तत्पश्चात् तीर्थसेवी अरुन्धतीवटके समीप जाय और सामुद्रकतीर्थमें स्नान करके ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक एकाग्रचित्त हो तीन रात उपवास करे। इससे मनुष्य अश्वमेधयज्ञ और सहस्र गोदानका फल पाता तथा अपने कुलका उद्धार कर देता है॥ ४१-४२॥

ब्रह्मावर्तं ततो गच्छेद् ब्रह्मचारी समाहितः।
अश्वमेधमवाप्नोति सोमलोकं च गच्छति॥ ४३॥

तदनन्तर ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक चित्तको एकाग्र करके ब्रह्मावर्ततीर्थमें जाय। इससे वह अश्वमेधयज्ञका फल पाता और सोमलोकको जाता है॥ ४३॥

यमुनाप्रभवं गत्वा समुपस्पृश्य यामुनम्।
अश्वमेधफलं लब्ध्वा स्वर्गलोके महीयते॥ ४४॥

यमुनाप्रभव नामक तीर्थमें जाकर यमुनाजलमें स्नान करके अश्वमेधयज्ञका फल पाकर मनुष्य स्वर्ग-लोकमें प्रतिष्ठित होता है॥ ४४॥

दर्वीसंक्रमणं प्राप्य तीर्थं त्रैलोक्यपूजितम्।
अश्वमेधमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥ ४५॥

दर्वीसंक्रमण नामक त्रिभुवनपूजित तीर्थमें जानेसे तीर्थयात्री अश्वमेधयज्ञका फल पाता और स्वर्गलोकमें जाता है॥ ४५॥

सिन्धोश्च प्रभवं गत्वा सिद्धगन्धर्वसेवितम्।
तत्रोष्य रजनीः पञ्च विन्देद् बहुसुवर्णकम्॥ ४६॥

सिंधुके उद्गमस्थानमें जो सिद्ध-गन्धर्वोंद्वारा सेवित है, जाकर पाँच रात उपवास करनेसे प्रचुर सुवर्णराशिकी प्राप्ति होती है॥ ४६॥

अथ वेदीं समासाद्य नरः परमदुर्गमाम्।
अश्वमेधमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति॥ ४७॥

तदनन्तर मनुष्य परम दुर्गम वेदीतीर्थमें जाकर अश्वमेधयज्ञका फल पाता और स्वर्गलोकमें जाता है॥ ४७॥

Scanned with CamScanner

कुमारमभिगम्याथ वीराश्रमनिवासिनम्॥ १४५॥
अश्वमेधमवाप्नोति नरो नास्त्यत्र संशयः।

तदनन्तर वीराश्रमनिवासी कुमार कार्तिकेयके निकट जाकर मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं है॥ १४५ १/२ ॥

अग्निधारां समासाद्य त्रिषु लोकेषु विश्रुताम्॥ १४६॥
तत्राभिषेकं कुर्वाणो ह्यग्निष्टोममवाप्नुयात्।

अग्निधारातीर्थ तीनों लोकोंमें विख्यात है। वहाँ जाकर स्नान करनेवाला पुरुष अग्निष्टोमयज्ञका फल पाता है॥ १४६ १/२ ॥

अधिगम्य महादेवं वरदं विष्णुमव्ययम्॥ १४७॥

वहाँ वर देनेवाले महान् देवता अविनाशी भगवान् विष्णुके निकट जाकर उनका दर्शन और पूजन करे॥ १४७॥

पितामहसरो गत्वा शैलराजसमीपतः।
तत्राभिषेकं कुर्वाणो ह्यग्निष्टोममवाप्नुयात्॥ १४८॥

गिरिराज हिमालयके निकट पितामहसरोवरमें जाकर स्नान करनेवाले पुरुषको अग्निष्टोमयज्ञका फल मिलता है॥ १४८॥

पितामहस्य सरसः प्रस्रुता लोकपावनी।
कुमारधारा तत्रैव त्रिषु लोकेषु विश्रुता॥ १४९॥

पितामहसरोवरसे सम्पूर्ण जगत्को पवित्र करनेवाली एक धारा प्रवाहित होती है, जो तीनों लोकोंमें कुमारधाराके नामसे विख्यात है॥ १४९॥

यत्र स्नात्वा कृतार्थोऽस्मीत्यात्मानमवगच्छति।
षष्ठकालोपवासेन मुच्यते ब्रह्महत्यया॥ १५०॥

उसमें स्नान करके मनुष्य अपने-आपको कृतार्थ मानने लगता है। वहाँ रहकर छठे समय उपवास करनेसे मनुष्य ब्रह्महत्यासे छुटकारा पा जाता है॥ १५०॥

ततो गच्छेत धर्मज्ञ तीर्थसेवनतत्परः।
शिखरं वै महादेव्या गौर्यास्त्रैलोक्यविश्रुतम्॥ १५१॥

धर्मज्ञ! तदनन्तर तीर्थसेवनमें तत्पर मानव महादेवी गौरीके शिखरपर जाय, जो तीनों लोकोंमें विख्यात है॥ १५१॥

समारुह्य नरश्रेष्ठ स्तनकुण्डेषु संविशेत्।
स्तनकुण्डमुपस्पृश्य वाजपेयफलं लभेत्॥ १५२॥

नरश्रेष्ठ! उस शिखरपर चढ़कर मानव स्तनकुण्डमें स्नान करे। स्तनकुण्डमें अवगाहन करनेसे वाजपेययज्ञका फल प्राप्त होता है॥ १५२॥

तत्राभिषेकं कुर्वाणः पितृदेवार्चने रतः।
हयमेधमवाप्नोति शक्रलोकं च गच्छति॥ १५३॥

उस तीर्थमें स्नान करके देवताओं और पितरोंकी पूजा करनेवाला पुरुष अश्वमेधयज्ञका फल पाता और इन्द्रलोकमें पूजित होता है॥ १५३॥

ताम्रारुणं समासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
अश्वमेधमवाप्नोति ब्रह्मलोकं च गच्छति॥ १५४॥

तदनन्तर ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक एकाग्रचित्त हो ताम्रारुणतीर्थकी यात्रा करनेसे मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल पाता और ब्रह्मलोकमें जाता है॥ १५४॥

नन्दिन्यां च समासाद्य कूपं देवनिषेवितम्।
नरमेधस्य यत् पुण्यं तदाप्नोति नराधिप॥ १५५॥

नन्दिनीतीर्थमें देवताओंद्वारा सेवित एक कूप है। नरेश्वर! वहाँ जाकर स्नान करनेसे मानव नरमेधयज्ञका पुण्यफल प्राप्त करता है॥ १५५॥

कालिकासंगमे स्नात्वा कौशिक्यरुणयोर्गतः।
त्रिरात्रोपोषितो राजन् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ १५६॥

राजन्! कौशिकी-अरुणा-संगम और कालिका-संगममें स्नान करके तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो जाता है॥ १५६॥

उर्वशीतीर्थमासाद्य ततः सोमाश्रमं बुधः।
कुम्भकर्णाश्रमं गत्वा पूज्यते भुवि मानवः॥ १५७॥

तदनन्तर उर्वशीतीर्थ, सोमाश्रम और कुम्भकर्णाश्रमकी यात्रा करके मनुष्य इस भूतलपर पूजित होता है॥ १५७॥

कोकामुखमुपस्पृश्य ब्रह्मचारी यतव्रतः।
जातिस्मरत्वमाप्नोति दृष्टमेतत् पुरातनैः॥ १५८॥

कोकामुखतीर्थमें स्नान करके ब्रह्मचर्य एवं संयम-नियमका पालन करनेवाला पुरुष पूर्वजन्मकी बातोंको स्मरण करनेकी शक्ति प्राप्त कर लेता है। यह बात प्राचीन पुरुषोंने प्रत्यक्ष देखी है॥ १५८॥

प्राङ्नदीं च समासाद्य कृतात्मा भवति द्विजः।
सर्वपापविशुद्धात्मा शक्रलोकं च गच्छति॥ १५९॥

प्राङ्नदीतीर्थमें जानेसे द्विज कृतार्थ हो जाता है। वह सब पापोंसे शुद्धचित्त होकर इन्द्रलोकमें जाता है॥

ऋषभद्वीपमासाद्य मेध्यं क्रौञ्चनिषूदनम्।
सरस्वत्यामुपस्पृश्य विमानस्थो विराजते॥ १६०॥

तीर्थसेवी मनुष्य पवित्र ऋषभद्वीप और क्रौञ्चनिषूदनतीर्थमें जाकर सरस्वतीमें स्नान करनेसे

Scanned with CamScanner

लोमशजीने कहा—महाबाहो! तुम ठीक कहते हो। यहाँ स्नान करके तपःशक्तिसम्पन्न श्रेष्ठ ऋषिगण इसी प्रकार चराचर प्राणियोंसहित तीनों लोकोंका दर्शन करते हैं। अब इस पुण्यसलिला सरस्वतीका दर्शन करो जो एकमात्र पुण्यका ही आश्रय लेनेवाले पुरुषोंसे घिरी हुई है॥ २०॥

यत्र स्नात्वा नरश्रेष्ठ धूतपाप्मा भविष्यसि।
इह सारस्वतैर्यज्ञैरिष्टवन्तः सुरर्षयः।
ऋषयश्चैव कौन्तेय तथा राजर्षयोऽपि च॥ २१॥

नरश्रेष्ठ! इसमें स्नान करनेसे तुम्हारे सारे पाप धुल जायँगे। कुन्तीनन्दन! यहाँ अनेक देवर्षि, ब्रह्मर्षि तथा राजर्षियोंने सारस्वत यज्ञोंका अनुष्ठान किया है॥ २१॥

वेदी प्रजापतेरेषा समन्तात् पञ्चयोजना।
कुरोर्वै यज्ञशीलस्य क्षेत्रमेतन्महात्मनः॥ २२॥

यह सब ओर पाँच योजन फैली हुई प्रजापतिकी यज्ञवेदी है। यही यज्ञपरायण महात्मा राजा कुरुका क्षेत्र है॥ २२॥

इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि तीर्थयात्रापर्वणि लोमशतीर्थयात्रायामेकोनत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥ १२९॥

इस प्रकार श्रीमहाभारत वनपर्वके अन्तर्गत तीर्थयात्रापर्वमें लोमशतीर्थयात्राविषयक एक सौ उनतीसवाँ अध्याय पूरा हुआ॥ १२९॥

(दाक्षिणात्य अधिक पाठका $\frac{१}{२}$ श्लोक मिलाकर कुल २२$\frac{१}{२}$ श्लोक हैं)

~~O~~

त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः

विभिन्न तीर्थोंकी महिमा और राजा उशीनरकी कथाका आरम्भ

लोमश उवाच

इह मर्त्यास्तनूस्त्यक्त्वा स्वर्गं गच्छन्ति भारत।
मर्तुकामा नरा राजन्निहायान्ति सहस्रशः॥ १॥

लोमशजी कहते हैं—भारत! यहाँ शरीर छूट जानेपर मनुष्य स्वर्गलोकमें जाते हैं; इसलिये हजारों इस तीर्थमें मरनेके लिये आकर निवास करते हैं॥ १॥

एवमाशीः प्रयुक्ता हि दक्षेण यजता पुरा।
इह ये वै मरिष्यन्ति ते वै स्वर्गजितो नराः॥ २॥
एषा सरस्वती रम्या दिव्या चौघवती नदी।
एतद् विनशनं नाम सरस्वत्या विशाम्पते॥ ३॥

प्राचीनकालमें प्रजापति दक्षने यज्ञ करते समय यह आशीर्वाद दिया था कि जो मनुष्य यहाँ मरेंगे वे स्वर्गलोकपर अधिकार प्राप्त कर लेंगे। यह रमणीय, दिव्य और तीव्र प्रवाहवाली सरस्वती नदी है और यह सरस्वतीका विनशन नामक तीर्थ है॥ २-३॥

द्वारं निषादराष्ट्रस्य येषां दोषात् सरस्वती।
प्रविष्टा पृथिवीं वीर मा निषादा हि मां विदुः॥ ४॥
एष वै चमसोद्भेदो यत्र दृश्या सरस्वती।
यत्रैनामभ्यवर्तन्त सर्वाः पुण्याः समुद्रगाः॥ ५॥

यह निषादराजका द्वार है। वीर युधिष्ठिर! उन निषादोंके ही संसर्गदोषसे सरस्वती नदी यहाँ इसलिये पृथ्वीके भीतर प्रविष्ट हो गयी कि निषाद मुझे जान न सकें। यह चमसोद्भेदतीर्थ है; जहाँ सरस्वती पुनः प्रकट हो गयी है। यहाँ समुद्रमें मिलनेवाली सम्पूर्ण पवित्र नदियाँ इसके सम्मुख आयी हैं॥ ४-५॥

एतत् सिन्धोर्महत् तीर्थं यत्रागस्त्यमरिंदम।
लोपामुद्रा समागम्य भर्तारमवृणीत वै॥ ६॥

शत्रुदमन! यह सिन्धुका महान् तीर्थ है; जहाँ जाकर लोपामुद्राने अपने पति अगस्त्यमुनिका वरण किया था॥ ६॥

एतत् प्रकाशते तीर्थं प्रभासं भास्करद्युते।
इन्द्रस्य दयितं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्॥ ७॥

सूर्यके समान तेजस्वी नरेश! यह प्रभासतीर्थ* प्रकाशित हो रहा है, जो इन्द्रको बहुत प्रिय है। यह पुण्यमय क्षेत्र सब पापोंका नाश करनेवाला और परम पवित्र है॥ ७॥

एतद् विष्णुपदं नाम दृश्यते तीर्थमुत्तमम्।
एषा रम्या विपाशा च नदी परमपावनी॥ ८॥
अत्र वै पुत्रशोकेन वसिष्ठो भगवानृषिः।
बद्ध्वाऽऽत्मानं निपतितो विपाशः पुनरुत्थितः॥ ९॥

यह विष्णुपद नामवाला उत्तम तीर्थ दिखायी देता है तथा यह परम पावन और मनोरम विपाशा

* 'प्रभास' की जगह 'हाटक' पाठभेद भी मिलता है।

Scanned with CamScanner